न बुरा सुनो, न बुरा सुनाओ...

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

अगर हम योगी बनते-बनते फिर क्रोधी-विरोधी बन गये, घृणा अपने जीवन में लाई, द्वेष अपने जीवन में लाया तो क्या फायदा हुआ ज्ञान पाकर भी! बाबा(परमात्मा) कहते हैं कि आपका शत्रु और कोई नहीं है, विकार ही आपका शत्रु है। अगर किसी व्यक्ति को हमने अपना शत्रु मान लिया तो जो मन, योग में लग कर हमें आगे बढ़ा रहा था, हमारी जो प्रगति हो रही थी, हमारे में जो परिवर्तन की कला आ रही थी, उसमें रुकावट आ जाएगी। इसीलिए सुन भला, सुनाओ भला, तो होगा तेरा भी होगा, सबका भला...।

हमें बचपन से ही पढ़ाया जाता है कि बुरा न देखो, बुरा न बोलो, बुरा न सुनो। ये कितनी हमारी जीवन को श्रेष्ठ गढ़ने के लिए उपयोगी है। आज हम बुरी बातों को न सुनो, न सुनाओ पर विचार करते हैं...। समाज में ऐसे लोग मिलेंगे जो आपको ऐसी बातें सुनायेंगे, ऐसे समाचार सुनायेंगे जो आपके लिए हानिकारक हैं। आपके परिवर्तन की गति को कम करने वाला हो। मिसाल के तौर पर कोई आपको कहेगा, अरे, आपको मालूम है, वो भाई आता था ना, दस सालों से ज्ञान में चलता था, कितना अच्छा चल रहा था, हम सब समझते थे कि इसकी बहुत अच्छी धारणायें हैं, वो किसी बुरे संग में फंसकर इस श्रेष्ठ मार्ग से विचलित हो गया। अच्छा, इसको बताने का उसका उद्देश्य क्या है? कोई व्यक्ति की आदत होती है खराब समाचार सुनाना, दूसरे के मन को खराब करना। आप कहेंगे कि कोई बात नहीं, हमने तो सुन लिया और उससे किनारा कर लिया। लेकिन कर्म कभी भी व्यर्थ नहीं जाता। जो आपने सुना, उसका बुरा या अच्छा प्रभाव मन पर पड़ने वाला ही है। इसमें कोई शक नहीं। अभी नहीं तो कुछ दिनों के बाद, कुछ वर्षों के बाद तो असर पड़ने वाला है। इतनी शक्ति तो अभी तक हमारे में आई नहीं कि उसका प्रभाव हम पर न पड़ता हो। अभी तो हम पुरुषार्थ ही कर रहे हैं सम्पूर्ण बनने के लिए। ऐसी नेगेटिव बातें, सुनने वालों में कमज़ोरी लाती हैं।

आप बाहर की दुनिया में जाकर कहो कि विनाश होने वाला है, ज्ञान योग करके अपना कुछ कल्याण करो तो वो क्या कहते है? भई, दुनिया में करोड़ों लोग हैं, उनको जो होगा, हमें भी हो जायेगा, देखा जायेगा, क्यों चिता करनी है! आप एक दीवार को हथौड़ी से मारते रहो, मारते रहो, उसको कुछ नहीं होता, ऐसा नहीं है। हथौड़ी लगते-लगते एक ऐसी स्टेज आ जाती है कि दीवार टूट जाती है, अपना स्थान छोड़ देती है। ऐसे कमज़ोरी की बातें, नेगेटिव बातें मनुष्य को ज़रूर प्रभावित करती हैं। इसलिए न ऐसा समाचार सुनना है और न किसी को सुनाना है। क्यों, क्योंकि पुरुषार्थी को वह बहुत नुकसान पहुंचाता है।

हम एक प्रैक्टिकल बात बताते हैं, यह सन् 1957-58 की बात है। उत्तर-प्रदेश के एक शहर में दो भाई थे, वे बहुत अच्छे थे। ज्ञान में बहुत अच्छे चल रहे थे और बड़ा तीव्र पुरुषार्थ कर रहे थे। बहुतों से आगे निकल गये थे। बहुत अच्छी धारणायें थीं उनकी। ज्ञान की प्वाइंट्स नोट करना, योग करना, ईश्वरीय मर्यादाओं में चलना, हर प्रकार से अच्छे चल रहे थे। उनमें से एक भाई दूसरे लोगों के संग में आ गया। उनकी बातों में आ गया। धीरे-धीरे उसके मन में विकृतियां आने लगी। क्रोध करने लगा। ग्लानि करने लगा। मैंने देखा है, हरेक मनुष्य के सामने ऐसी परीक्षा आती है। ऐसा समय आता है कि उसके दबे हुए संस्कार, मरे हुए संस्कार फिर ज़िन्दा होने का, जागृत होने का मौका पा लेते हैं। ऐसा ही इस व्यक्ति को हुआ। उसको ज्ञान

में संशय आने लगा और धारणायें कमज़ोर होने लगी। दूसरा भाई जो उसका दोस्त था, उसको लगने लगा कि इसकी धारणायें कमज़ोर होने लगी, ऐसा व्यक्ति क्लास में नहीं आना चाहिए। जब पवित्रता की धारणा ही कमज़ोर है तो इसको सेंटर पर आने नहीं देना चाहिए। इस भाई का उद्देश्य तो सही था क्योंकि उसका विचार था कि ऐसे पवित्र स्थान पर अपवित्र व्यक्ति को आने नहीं देना चाहिए, जिसकी दृष्टि-वृत्ति वायुमण्डल को खराब करे। इसकी ज़िम्मेवारी उसने अपने ऊपर ले ली। इन दोनों की कहासुनी हुई, इसके बाद सेंटर के बाहर उन दोनों की हाथापाई हुई। उसने बोला, तुम कौन होते हो मुझे रोकने वाले, इसने बोला, सेंटर पर आकर तो देखो, तुम्हारे जैसे आदमी को आने की कोई ज़रूरत नहीं। एक समय था जो दोनों घनिष्ठ मित्र थे, दोनों अच्छे चल रहे थे, एक की धारणायें कमज़ोर हो गई, उसको क्लास में आने से छुड़ाने के लिए दूसरे ने ज़िम्मेवारी ली और एक-दूसरे से झगड़ा करने लगे। जिसने झगड़ा किया, पहले उसमें भी क्रोध नहीं था लेकिन जन्म-जन्मांतर से क्रोध तो रहता है। जब ज्ञान में आया, उसने क्रोध को ज्ञान-योग से दबा तो रखा था। जब आपस में झगड़ा हुआ तो बात इज़्ज़त की आई और क्रोध को मौका मिला और क्रोध बाहर निकला। बाहर खड़े होकर मुहल्ले में सबके सामने दोनों लड़े। इससे कितनी डिस-सर्विस हुई होगी! इतनी डिस-सर्विस हो गई कि टीचर को उस स्थान पर सेवा करना ही मुश्किल हो गया। लोग कहने लगे, हमने तो सुना था कि ये बहुत शांत जगह है, यहाँ मनुष्यों को क्रोध आदि विकारों पर विजय प्राप्त कराई जाती है। हम इन दोनों को रोज़ आते-जाते देखते थे, इनको हम अच्छा मानते थे लेकिन आज इनको क्या हुआ, आपस में लड़ रहे हैं!

यह सोचें कि यह हुआ कैसे? एक भाई जो ठीक चल रहा था, वह रोज़ किसी से अपने दोस्त के बारे में सुनाता था कि वह ठीक नहीं है, वह ठीक नहीं चलता। अगर कोई विद्यार्थी ठीक नहीं चलता है तो उसे ठीक करना टीचर का काम है। उसको बाबा की क्या शिक्षा देनी है, उसको कैसे समझाना है, ये बहन जी का काम है। अगर मान लो कि टीचर ने भी उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया तो उसकी भी गलती है, लेकिन हम टीचर को बता तो सकते हैं कि बहन जी, इस व्यक्ति के बारे में कुछ सोचो। हम कितने भी बड़े हों, फिर भी हैं तो स्टूडेंट ही। टीचर दूसरे हैं। स्टूडेंट, स्टूडेंट हैं। बाबा ने टीचर्स को ज़िम्मेवारी सौंपी है, यह ठीक है। सेंटर के प्रति हमारा भी तो कर्त्तव्य है। लेकिन लॉ को हम स्टूडेंट हाथ में नहीं ले सकते। टीचर द्वारा ही सेवा या शिक्षा दिलानी है। हम कह सकते हैं कि बहन जी, इसकी धारणायें ठीक नहीं हैं, इसके आने से क्लास का वातावरण खराब होगा। इसलिए यह न आये, इसके लिए आप उसे समझाइये। इसके बाद भी अगर टीचर कुछ नहीं करती तो मुख्यालय को सूचित करें। उसके बाद भी कुछ नहीं होता तो आपका काम समाप्त हो गया। आपने अपनी ड्यूटी बजाई, फिर उसको छोड़ दीजिए। वह व्यक्ति भला, वह संस्था भली, आपका क्या जाता है? आप तो यहां ज्ञानी-योगी बनने के लिए आए हैं। अगर हम योगी बनते-बनते फिर क्रोधी-विरोधी बन गये, घृणा अपने जीवन में लाई, द्वेष अपने जीवन में लाया तो क्या फायदा हुआ ज्ञान पाकर भी! बाबा(परमात्मा) कहते हैं कि आपका शत्रु और कोई नहीं है, विकार ही आपका शत्रु है। अगर किसी व्यक्ति को हमने अपना शत्रु मान लिया तो जो मन, योग में लग कर हमें आगे बढ़ा रहा था, हमारी जो प्रगति हो रही थी, हमारे में जो परिवर्तन की कला आ रही थी, उसमें रुकावट आ जाएगी।

जबलपुर-नेपियर टाउन। दीपावली के पावन पर्व पर महापौर स्वाती गोडबोले को ईश्वरीय सौगात एवं प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. भूमि तथा ब्र.कु. वर्षा।

सासाराम-बिहार। गोपाल नारायण सिंह विश्वविद्यालय के संस्थापक एवं राज्यसभा सदस्य गोपाल नारायण सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता तथा ब्र.कु. नीतू। साथ हैं पैराडाइज़ चिल्ड्रेन पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर संतोष कुमार तथा अन्य।

जयपुर-वैशाली नगर। राजयोग थॉट लेबोरेट्री,जे.ई.सी.आर.सी.,जयपुर के तीसरे वार्षिकोत्सव पर आयोजित 'स्टेप अप योर लाइफ' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. चार्ली हॉग,नेशनल कोऑर्डिनेटर,ब्रह्माकुमारीज़,ऑस्ट्रेलिया। कार्यक्रम में भारत, जर्मनी तथा अर्जेन्टीना से प्रबुद्धजन शरीक हुए।

भुवनेश्वर-पटिआ(ओडिशा)। 'सड़क सुरक्षा और सामाजिक दायित्व' विषयक सेमिनार में चंद्रशेखरपुर ट्राफिक आरक्षी अधिकारी प्रमोद पटनायक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गुलाब तथा ब्र.कु. कविता। साथ हैं ब्र.कु. प्रो. ई.वी. गिरीश, समाजसेवी दिलीप कुमार साहु, भुवनेश्वर आंचलिक परिवहन अधिकारी संजय कुमार बेहेरा तथा हेलो कैब के एम.डी. श्रीयुक्त तृप्ति रंजन दास।

मुरैना-म.प्र.। होमगार्ड ऑफिस में कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं ब्र.कु. प्रहलाद, ब्र.कु. सी.पी. शर्मा,राज., ब्र.कु. रचना, होमगार्ड कमाण्डेंट तथा अन्य।

झोझूकलां-कादमा(हरियाणा)। नवरात्रि के पावन पर्व पर सजाई गई चैतन्य देवियों की झाँकी।

गया-ए.पी. कॉलोनी(बिहार)। दुर्गा पूजा के अवसर पर चैतन्य देवियों की झाँकी का अवलोकन करने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. प्रतिमा के साथ सी.आर.पी.एफ. कमाण्डेंट सोहन सिंह, अंजना सिंह तथा मीरा वर्मा।

शमसाबाद-आगरा(उ.प्र.)। नवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. लक्ष्मी तथा अन्य।